

## आत्म-कथ्य

रामतिया मत तोड़ के पश्चात् ध्या जमीन  
भाषणी व परमाती काव्य संग्रह प्रकाशित  
तो हुये लेकिन मेरी प्रिय विधा गीता  
का संग्रह प्रकाशित होने में काफी लम्बा  
अंतराल रह गया । इस बीच पत्र  
पत्रिकाओं में, दूरदर्शन, आकाशवाणी व  
कवि सम्मेलनों में कई गीत लोकप्रिय  
हुये मगर उन्हें पुस्तक रूप देने में विलम्ब  
हुआ मगर मेरे उत्साही सहयोगियों ने  
इस संग्रह (कृष्ण कुण्ड ने विलमासी) को  
शीघ्र प्रकाशन की जो व्यवस्था की मैं  
उन्हें हृदय से धन्यवाद ज्ञापित करना  
चाहता हूँ । स्वामीजी से श्री कृष्णलाल  
जी सिखवाल श्री महावीरसिंह जी  
खगारोत, व प्र. य. मेरे अनेकों प्रशंसक  
जिनकी प्रेरणा से मुझे आत्मबल मिला ।  
मुझ विश्वास है कि आप सभी शुभ  
चिन्तकों व राजस्थानी भाषा के प्रबल  
समर्थकों को यह संग्रह पसन्द आयेगा ।

— कल्याणसिंह राजावत

कुरु कुरु नै बिलमासी

कल्याणसिंह राजावत



राजावत प्रकाशन

चितावा हाउस,  
63, शिल्प कॉलोनी,  
भोटवाडा, जयपुर-12

प्रकाशक

राजावत प्रकाशन

चितावा हाउस,

53, शिल्प कॉलोनी,

भोटवाडा, जयपुर-12 (राजस्थान)

□

प्रथम संस्करण, 1989

□

मूल्य—पैंतीस रुपये

□

मुद्रक

रसकपूर प्रिंटर्स

दीनानाथजी का रास्ता, जयपुर



स्नेहशील ठाकुर मंगलसिंह  
भदलिया

नै घणै नेह सू

—कल्याणसिंह राजावत



## दृष्टि प्रस्तुति

भाव को जीना और उसके चितराम उतारना ग्राम आदमी का नाम नहीं है। ग्राम आदमी में विशिष्ट प्रतिभा अनुभूति के सयाग से अभिव्यक्ति की कला पाती है, तब ही कुछ बात बन पाती है और वह बात ग्राम आदमी की हाती हुई भी ग्राम से बढ़कर होनी है यानि कि ग्यास बात। वह खास बात अपनी अस्मिता स हर ग्राम को आ दोलित करती है। ऐसी ही आन्दोलन की वृत्ति राजस्थानी के मधुर कवि श्री राजावत में हैं जिस पर ग्राम आदमी मुग्ध है। राजावतजी के अनेक गीत संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं, इन गीतों की भाव प्रवणता तथा अनूठी अभिव्यक्ति ने सामा यजन क हृदय को झकड़ कर दिया है।

प्रस्तुत मकलन 'कुण कुण नं विलमासी' का मगनाचरण ही जीवन की मटीक व्याख्या के रूप में है जो आस्था और यथाथ का मूल धनोक है—

समरथ हो समझा तो ऊमर ई ऊमर ह।

नाचा तो जिनगाणी घूमर ई घूमर है ॥ [जिनगाणी]

मानव जीवन सुख दुःख, हृष शाक राग-द्वेष आदि सभी अ तद्र द्वा से मुक्त हो सकता है यदि अनासक्त भाव से जीता है तो जीवन में नृत्य ही नृत्य है अर्थात् जीवन की साधकता है। जीवन के सनातन रहस्य को सहज भाव से अभिव्यक्त किया गया है। श्री राजावत ने सरल, सीध और स्वाभाविक रूप से गीतों के माध्यम से अनकही, अनछुई बातों का कहकर दिशाबोध देने का निशा दा ह जा स्पृनीय है। छोटे छोटे शब्दों में उक्ति वचि-य की विवग्धता है। जीवन में कम के प्रति आस्था आवश्यक है विरासत की पूजी से गति नहीं है। कवि ने कहा है—

गवाही दतिहासा री देर,

उगाही कद ताई करसी।

घुरजडो हुई भाखरा डेर,

चिण्णई अब किया करसी ॥

कवि यथाथ के प्रति आग्रहशील है तो आग्रह की पगडंडी पर भी चटना चाहता है। रसभरे शृंगारिक गीतों में स्वच्छ दत्ता की भावना नहीं है ता व जन

व प्रति ध्यामो भी नहीं । श्रृंगारिक गातो म कवि दृष्टि प्रसाद म ही साधकता स्वीकार लेना है । अगन आत्मसंकल्प इच्छा, कम और क्रिया के समवित रूप के व सदम म कहता है—

जितरी जडा जमी म होसी, उतरी साय बधीजला,  
जितरी रुई कनरण राख, उतरा सूत कनीजला ।

अपने कम की कलाप्ति भाग्य पर नहीं छोड़ता अपितु स्वयं के दायित्व व प्रति ही आग्रह है । वैयक्तिक अनुभूतियों से समष्टि के सुख दुःख, हृष शोक, उल्लास कुण्ठा का दृढ़ जीता हुआ कहता है—

सूरज इतरो ना सिलगाव, पण तारा उतपात कर ।

जहाँ श्रृंगार, प्रवृत्ति एवं सौंदर्य व मनोरम प्रतिविम्बों की शब्दचित्र में उतारा है वहा समाज क संघर्ष व प्रति अनदेखी की भावना नहीं है । नारी के अस्तित्व की सुन्दर समीक्षा की गई है—

भगती रो गणगौर हू  
सगती रो सिरमौर हू ।

समाज क साथ साथ राजनीतिक-परावरण के प्रति अपनी आशंका को जम दिया है—

बो झटो, बो साँचो कोनी, कुण पर करा भरोसो कैया ।  
राजनीति दल म्हारी निजरा, मछुवारा है जाल भायला ॥

श्री राजावत का कवित्व सवतामुखी है, जीवन क वैयक्तिक एवं सामाजिक पक्ष को उजागर करते हुए राष्ट्रीय चिन्तनधारा के प्रति सजग है । भाषा म सहज भावलिङ्गता तथा आकषण तो कवि का वशिष्ठ्य है । इस सक्तन का शीपक ही 'कुण कुण नै वितभासी' कविता की साधकता है । मैं समझता हू कि कवि का अपना अस्तित्व है और अपनी अभिव्यक्ति धारा से हृत्कर है, जो अभिनन्दनीय है ।

आचार्य उमेश शास्त्री  
विभागाध्यक्ष सङ्कृत  
पारोक कालज, जयपुर

# अनुक्रमिका

जिनगाणी	1
बेलडी	3
जायन है	4
फूल सू बाता करणी है	6
हेत बाजार मे	8
जावन मत जा रै	10
घारी पू जी ल	12
बीज म बरकत होगी र	14
ये छण गाथा गीत	15
पछतावो	16
आव र	17
जे तू मिल ज्याय कण	19
समदर पर बादळा	21
अडीक	23
प्रीत री पोसाल हो थे	25
सौरम रें द्वार	27
कलियां कानी रै	28
घारो आणो	29
महे ता जाणू	30
कुण कुण नै बिलमासी	31
तू गोरी, बा सांवली	33
रमता-रमता	35
सूखा रू ख ' गीला बोल	36
नाव सू लस्कर बध जासी	38
जद कुण गीत लिखला	40
अघारो	42
रोसनी र बारण	44
दोड दडबडां	45



गीत	47
भूल बैठे अर डाल कटे	49
तन तो तोला मासा रें	51
रुत न रुजगार मिलना	53
प्रीत रा मन	55
आबो फलगयो अ	57
क्यू	58
आय मती	60
है खीचडी लजुरां प	62
मै जाणा	63
लुभाया लेगी रें	65
माणस	66
आफत म आदमी	68
बाचा लोय घडी	69
हार मती	70
ऊ ट डू गरा नीच आया	72
बयू दोस कवीरा प	73
बात	74
सारठा	75
सारठा	76
बात कर बादल सू	77
थे आया	78
मुक्तक	79
राजस्थानी नार हू	81
रावण क मरसी	83
हलोत्यो	85
भायला	86
दोहा	87
सोरठा	88

# जिनगाणी

समरथ हो समझा तो ऊमर ई ऊमर है  
नाचा तो जिनगाणी धूमर ई धूमर है,

काटा तो सस्तर है  
सीलया तो अस्तर है  
पीलया तो समदर है  
करलया तो कमतर है

इण रा रूप अणूता है  
अज हू ई अणकूता है  
ओढा तो जिनगाणी चूनड ई चूनड है

आभै रो पाणी है  
घरती रो घाणी है  
किण रो तो जाणी है  
किण रो अणजाणी है

सुरता सार अदीठी है  
बळती भळा अगीठी है  
थाका ता जिनगाणी डूगर ई डूगर है

जोवन रा भाला है  
 मदभरिया प्याला है  
 समझा तो झमरत है  
 अण समझया हासा है

इण रा नैण नसीला है  
 इण रा बेण रसीला है  
 निरग्या तो जिनगाणी भूमल ई भूमल है  
 पायल भणकारा है  
 गीता गणकारा है  
 काजल री कोरा है-  
 मैदी रतनारा है

आ तो काण कनोरा है  
 आ तो बाण बनोरा है  
 पेरा तो जिनगाणी भमर ई भमर है

# बेलडी

बोर्गा बोच बेलडी, पसरवा लागी  
सोरम सारे बायर, विखरवा लागी

चेतो राखी हाळी माळी  
आ है सोने ही सू दाळी  
हे रे रुपा मू, रुपाळी  
इणरी राखीज रुखाळी  
चढगी होळो डांगळ, इतरवा लागी

ताता जाळा सा फैलावे  
श्रीता जाता ने उळभावे  
भवता भोळा ने भरमावे  
स्याणी सवर जो सरसावे  
काया ताता दूध सो, उफणवा लागी

उडता पंछी रो मन डोल  
आंक भीठू धान ओ ल  
कोमल पुतळावे सुड तोल  
बोली प्रीत भरी सै बोल  
भवरा का ई कानडा, कतरवा लागी

अळिर्यांगळिया धूमरे घाले  
सैना सैना मे समझाले  
जणा नेणा, सू, चवळाले  
गजवण बेजा ही ब्रह्मकाले  
लाजा मरती आगणी, कुचरवा लागी

## जोबन हँ

गोरी ! थारै नैणा मे मदसाळ-जोबन है  
गोरी ! थारी वाणी वँण रसाळ-जोबन है

जै जीवण जोबन नो होतो  
(तो) सपनो साचो नीं होतो  
सास अलूणी ही रह जाती-  
प्रीत दिवलियो ही कृण जोतो

गोरी ! थारा उळभ-सुळभ बाळ-जोबन है  
गोरी ! थारी गजमस्ती री चाल-जोबन है

जै भवरो बागा नीं जातो  
(तो) फुलडो यू ही मुरभातो  
सौरम री मरजादा घटती-  
रूप कवारो ही रह जातो

गोरी ! थामे फूला री फुलवार-जोबन है  
गोरी ! थारी काया ही कचनार-जोबन है

जै रग रा व्योपार न होतो  
(तो) रूत री रूजगार न होतो  
रग रगिया भव सागर तरता-  
बदरग वेढो पार न होतो

कुण कुण नै बिलमासी

गोरी ! थारा अग अग रग साळ-जोवन है  
गोरी ! थारा अघरा मिसरी थाळ-जोवन है

जै जग मे सिणगार न होतो  
(तो) जीवण मे सार न होतो  
काजळ टीकी रै बिन फीको-  
अग रहतो-अणगार न होतो

गोरी ! थामे पायल री भरणकार-जोवन है  
गोरी ! था में मिलणै री मनवार-जोवन है

1



# फूल सूं बातां करणी हैं

जलम रो जोवन है तू हार

प्रीत रो गीना सू बोपार

तार मे सौरम रो सगीत-

मीत सू घाता करणी है

फूल सू बाता करणी है

आगण-आगण खणकै कागण, भागण री भणकार रै  
कामण-कामण, मरवण भागण, गजवण हृद सिणगार रै

गुमानण घू घट री दरकार

छोडता हुन घणा रिभवार

हार मत, रंमलै रोगा रीभ-

रीत री राता रगणी है

फूल सू बाता करणी है

होळ-होळ इमरत घोळ, ढोळ रस री धार रै

भोळ-भोळ भाव भकोळै, रोळ रग गुलाल रै

मुळकता ई माना मनवार

नैण मे नसो चढ सो बार

द्वार पर भ्रूमा करा उढीक-

ठीक रग मागा भरणी है

फूल सू बातां करणी है

सरवर सरवर' गागर-गागर हस बतळावण पाळ रै

तरवर तरवर तन मन तर-भर मनभर हीडे डाळ रै

कुण कुण नै बिलमासो

सास में चदण री मैकार  
दिखावो चादे रै उणिहार  
लाज रो लस्कर थमग्यो तोर-  
नीर नद हाया तरणी है  
फूल सू बाता करणी है

सावण-सावण लगे सुहावण, भावण कामणगार रे  
फागण-फागण सखी सुहागण, आवण-जावण द्वार रे

नीद नी आवे सारी रात  
पूछ ले काजळ सू परभात  
गात रो गुघळें नितरे रूप-  
घूर्प तो साखा भरणी है-  
फूल सू बाता करणी है

गोरी-गोरी नाच-नचोरी वागा री कचनार अ  
जोडी-जोडी नेह-निगोही मौसम री मनवार अ

आवसो फेर नहीं मधुमास  
रचाले रळ रस भीणो रास  
सास रो सागो है दिन च्यार-  
बार नी साजा सरणी है  
फूल सू बाता करणी है



# हेत बजार में

विक्रया हेत बजार मे हिवहे रे व्यापार मे  
सारा होरा मोती म्हे, खो दिया गुवाड मे

क्यू तो हा अणजाण मे  
क्यू हा नवी पिछाण मे  
छलिया पू जो लेयग्या  
इण ई खीचाताण मे

बोणा बीज बहार मे, बो दिया उजाड मे  
सारा हीरा मोती म्हे, खो दिया गुवाड मे

इतरा लाग्या सातरा  
भूल गया से आतरा  
नैणा बीच मडोजग्या  
चितराम कितरी भातरा

जोणा दिवला देवरै, जो दिया उधाड मे  
सारा हीरा मोती म्हे, खो दिया गुवाड मे

बाता नही बुहारणी  
धाता नही सवारणी  
जोवरण प्यास पिछाणलै  
पढता नही उधाडणी

कुण कुण न बिलमासी

भूला मूल गवाइयो, कचन गयो उधार मे  
सारा हीरा मोती म्हे, खो दिया गुवाड मे

मानो हर मनवार नै  
समझी अपणी धार नै  
लहरा नावा छोड दी-  
भूल गया पतवार नै

रह्या किनारा आतरा, उलझ गया मझधार मे  
सारा हीरा मोती म्हे, खो दिया गुवाड मे

# जोवन मत जा रे

सपना सिरजण हार जोवन  
सेजा रा सिंगार जावन  
रूपा रा रिक्कवार जावन यमज्या रे  
पीत री पतवार जोवन मत जा रे

मद रो आघा प्यालो है रे पीवण दे  
धू घट हाळो भालो है रे जीवण दे  
सावण सुगणी आलो है रे भीजण दे  
सपनी रूप रूपाळो है रे छीजण दे

झूमर रा अवतार जोवन  
देवा रा दरवार जावन  
मोसम री मतवार जावन यम ज्या रे  
मैफन री मतवाळ जावन मत जा रे

काया री कचनार कळी न सेवण दे  
दरप घणो है डीला दरपण दमण दे  
सजता साज सिंगार सरूप समेटण द  
उळभण सू हद हेत हेत मे उळभण दे

कचन रा कळदार जावन  
समदर सा सळदार जावन  
भळ बळता भळार जावन यम ज्या रे  
फळ-फूला फळदार जावन मत जा रे

कुण कुण नै बिलमासो

सातू सुर मे राग रागणी गावण द  
पगा-पगा मे पायलडो खगकावण द  
रुत रगियो रग रूप अनूप रिभावण दे  
फूल्या अणहद फूल महक ढुळ कावण दे

उनमादी उणियार जोवन  
मद छकिया सिरदार जोवन  
मनमथ री भणकार जोवन थम ज्या रे  
गजवण रा गळहार जोवन मत जा रे

दो छिए रो ओ मेळो है रे देखाला  
रामत रळियो रेळो है रे बहकाला  
वाग-वाग मे सौरम सागे महकाला  
कठ-कठ मे कोयल सागे चहकाला

अगा रा अणगार जोवन  
ताकत री तरवार जोवन  
अचपळिया अधकार जोवन थम ज्या रे  
अवलख रा असवार जोवन मत जा रे

# थारी पूजी ले

प्रीत बिना ओ जलम अधूरो-थारी पूजी ले  
किण री करा रुखाळ अक्ला-ताळा कुजी ने

सई किती सवार अवेरो  
काया वाच जडो  
मळमळ न्हाया, मलमल पैरो  
कठा फूल लडी  
दरपण मू नित हस बतळाया  
अबखी वाण पडी  
पळ मे फागण धूम मचातो  
पळ मे मेघ भडी

पळ पळ रे पळवा सू थान्या थारी पूजी ले  
किण री करा रुखाळ अक्ला ताला कुजी ले

मन मे रवे वात "क कोई  
मीठी बात करे  
नेण सैण रा दिवना वातो  
सारी रात बळे  
आमा रे आकास सलूणो  
चादो नही ढळ  
कदे न मुरभे सौरम सेती  
इसडो फूल फळ

सपन बिना सा नीद अधूरो-थारी पूजी ले  
किण री करा रुखाल अक्ला-ताळा कुजी ले

कुण कुण नै बिलभासी

कातर-कातर ओढण सू कण  
सारो डोल ढक  
तिणकै तिणकै री तपतो कद  
खदबद खीच पकै  
हर उडती पाख्या रं सागं  
उडिया पाख थकै  
हर बसी रं सागं सागं  
नाच्या नही धिकै

घाट-घाट पर जा-जा थाक्या थारी पूजी ले  
किण री करा रुखाळ अकला ताळा कूजी ले

देवलिया सै धोक घापिया  
अव किण नै पूजा  
आखर अरथ अलेखूं राखे  
आखर सू धूजा  
जिण भूरत रा दरसन करिया  
मिली नही हूजा  
कुण भरमाई कुण ले भाग्या  
अव कुण नै बूभा

घार नही रस सार नही बस थारी पूजी ले  
विण री करा रुखाळ अकला ताळा कूजी ले

# बीज में बरकत होगी रै

कळी फूल मे रूप बदलगी  
भवरा री सा बात समभगी  
देखो रत रो अक अचम्भो

दाबडी दरखत होगी रै  
बीज मे बरकत होगी र

नुगरो पवन कुचरणी गारो  
हर भाकै निरख उणियारो  
आसा रो आकास पसार्यो

निजर तो सरबत होगी रै  
बीज मे बरकत हागी र

तन गी तिरस जेठ री परती  
जुगा जुगा मू रगी परतो  
प्रीत मेघ र अक हवळ

बूद सू तिरपत हागी र  
बीज मे बरकत हागी र

मूघा हावै हस बतलाणो  
लागा र बिच कुवद कमाणो  
दया जग रो बात बणाणा

काकरी परबत हागी र  
बीज मे बरकत हागी -

## थे अणगाया गीत

थे अणगाया गीत, रीत सू थान गावाला  
म्हे मोद मनावाला

वाच्योडा नै फर वाचणो  
म्हारै मन री आदत कोनी  
जूनी भूरत न पूजण री  
चचल तन री साबत कोनी  
नित सूरज सू नवो जलम रे रास रचावाला  
म्हे माद मनावाला

डाळ डाळ पर रग फळै पण  
कळिया म बा सौरम कोना  
दिवस तपै सूरज कळभळनो  
पण चादी सी रगत कानी  
थे अण विधिया फून, हेत सू गलै लगावाला  
सिणगार सजावाला

सपना रो व्योपार करुयो जद  
थे हाटा पर आया कोनी  
मेळा रा रेळा मे ढुढया  
म्हा नै थे बसळाया कोनी  
थे अणमिलिया गीत, प्रीत सू थान पावाला  
म्हे भाग सरावाला



# पछतावो

मन रै महला, प्रीत गाव में  
गीत घणा अणगाया रंग्या

घणी अचपळी है जिनगाणी  
जोस घणी जोवन नगरी मे  
तन परनाळा, तिरै आगणं  
नीर घणो रुपल गगरी मे

हिय रै समदर लहरा लेता  
अणगिण होठ तिसाया रंग्या

तिरिया-भिरिया सरवर पाणी  
भिरमिर आज वरसाती बेळा  
कळिया कूख उजागर होता  
मदछकिये वास ती चेळा

सगपण मेघ घरा विच होता  
भूण घणा अणजाया रंग्या

कवळी देह कसूमल सपना  
अणहूता अणदख्या दीखे  
सबद अधूरा भावा भीज्या  
हिव नना सू वाचण सीखे

तन रोळा पग सस बथूळा  
काम घणा सरमाया रंग्या  
गात घणा अणगाया रंग्या

# आव रै

निजरा करै जुहार आव र  
अघरा पर मनवार आव रै  
प्रीत देस रा पावणा  
मिठ बोलणा मन भावणा

देख उमरझी घूमर घाल  
करै उतावळ कावळ चाल  
नीद लजावै, सग ना आवै  
जागण रै मिस ओळू आवै

बाघे बादरवाळ आव रै  
खडी सजाया थाळ आव रै  
प्रीत पथ रा पावणा  
हस बोलणा मन भावणा

रुत लागै रै नवी नवेली  
पवन अचपळी बणै सहेली  
फूला फूला मे मद दुळिया  
अग अग मे हिगळू धुळियो

नाचै मन दे ताळ "आव रै  
गावै रुप घमाळ आव रै  
प्रीत पोळ रा पावणा  
रग रोळणा मन भावणा

धुण धुण नै बिलमासो

वतळाव तो नासा फडकें  
सवद सुणें तो हिमडा घडक  
चाद उग आघ मुसकाता  
सरगम सुध-बुध विसरें गाता

मुस्कल घणो रप्ताळ आव रें  
टूट सरवर पाळ आव रें  
प्रात पाळ रा पावणा  
मद मोळणा मन भावणा

# जे तू मिल ज्याय कणा

जे तू मिलज्याय कणा, मनडै रो बात करा  
रुत री तो रमभोळा, रमल्या साथ तरा  
जे तू मिल ज्याय कणा

गीत तो गावण रा और कई गाया  
हिवडै री हाट तरा और कई आया  
आवो ब्योपार करा, दो सू दो चार करा  
रुत री तो रमभोळा, रमल्या साथ तरा  
जे तू मिल ज्याय कणा

कळिया नै काम घणा, महक दुळावण सू  
भवरा बदनाम घणा हस वतळावण सू  
आवो बा याद करा, थोडी कुचमाद करा  
रुत री तो रमभोळा, रमल्या साथ तरा  
जे तू मिल ज्याय कणा

प्रीतम री साख घट्या, कागद ओ कोरो है  
मन-भर जी आप नट्या, जीवण तो दोरो है  
आवो तन ताप हरा, आवा मन घाप भरा  
रुत री तो रमभोळा, रमल्या साथ तरा  
जे तू मिल ज्याय कणा

कुण कुण नै बिलभासी

ये तो भाको कोनी, इया ई पिछाणा के  
थोड़ी थोड़ी बात बिना, थान म्ह जाणा के  
मिलज्यो ये साभ ढळया, दिवलै रो वाट वळया  
हन री तो रमभाळा, रमल्या साथ तरा  
जे तू मिल ज्याय कणा

थोडा सो सावण है थोडो ई फागण है  
थाडो सो सोवण है थोडो ई जागण है  
थोडो सो जाग करा, थाडो सो फाग करा  
हन री तो रमभाळा रमल्या साथ तरा  
जे तू मिल ज्याय कणा

# समदर पर बादला

मछुआ रा जाळ तां बरजता रैया  
समदर पर बादळा बरसता रैया

धाक्या नै थकावण रो  
जीम्या नै जिमावण रो  
दूनिया रो तो धारो है  
धाप्या नै घपावण रो

उमड-घुमड काळडा गरजता रैया  
समदर पर बादळा बरसता रैया

सूखै सोन तळाई रै  
अमर बेल मुरभाई रै  
फळवन्ती फळ हीण हुवै  
रसवन्ती कुम्हळाई रै

तिरसाया मोर तो तरसता रैया  
समदर पर बादळा बरसता रैया

देखो तो आ हाणी रै  
होणी ई अण होणी रै  
सूख गई जद धरती तो  
छेती बयारी बोणी रै

कुण कुण नै बिलमासी

बन सू अण बण कर लरजता रया  
समदर पर बादळा बरसता रैया

घर री आ फुलवाडी रै  
सीच्योडी सी वयारी रै  
घार विना मण सार नही  
उजडै है आ सारी रै

ढाली सू पानडा परसता रया  
समदर पर बादळा बरसता रैया

# अडीक

अडीका उणमणा वंछ्या, अदीठा डोळ दरसावो  
याद रो आगणो सूनो, ओळ रो पोळ परभावो

अलूणी प्रीत लागे है

अलूणा गीत लागे है

अलूणी हेत रो हाटा, सलूणा अब न तरसावो

गोरखडे वाटडी जोवा

हिवडली हेत मे पोवा

जोवता ही रहा जागा, भाग न धे न भरमावो

अटकता आंतरा तोडा

भटकता पथ न मोडा

जलम न आप सू जोडा, ठिकाणसर तो मिलजावो

रूप रो रास भीणो है

सास रो साथ भीणो है

जोणो ही अजीणो है, प्रीत रो सार समझावो

थळिया थाम चौवारा

गळिया गाव रा बाडा

बघावै बारना लेवै, नेह रो मेह बरसावो



मोसमा बोलटा बोल  
 बादळा भेद हो सोल  
 बोल्ता हो सरै बोला, भबोला भव न उमझायो

दिए दिए धोयळो छेदै  
 उदासो भणयको तड

पिरावा में घुट तनटो, मना में मोद सरसायो  
 याद रो घागणो मूनो, माळ री पोळ परसायो



# प्रीत री पौसाल हो थे

थाने तो बुलावा म्हे, म्हाने ना बुलावो थे  
बिना ई बुलाया बोलो, आवा तो किया  
वतळावा तो किया

गीत री तो ओळी हो थे  
रीत री तो रोळी हो थे  
प्रीत री हमजोळी हो थे -  
रूप री रगोळी हो थे

रूप री रगोळी

थाने तो रिक्कावा म्हे, म्हाने ना रिक्कावो थे  
सुर ने स्यावासी कोनी, गावा ता किया  
वतळावा तो किया

कितरी साव भोळी हो थे  
मिसरी माय घाळी हो थे  
धुमर रै चौमामे मे तो -  
नीम री निमोळी हा थे

नीम री निमोळी

थाने उळभावा म्हे म्हाने उळभावो थे  
सुलभणें मे तो सार नी मुळभावा तो किया  
वतळावा तो किया

कुण कुण न बिलमासी

मद री मीक घूटी हा थे  
सरजीवणी वूटी हा थे  
हीरा रा थे हार ही जो-  
नगा री अगुठी हो थे

नगा री अगुठी

याने ना भुलावा म्ह, म्हाने ता भुलावो थे  
हिये हदे हेत में, हरखावा तो किया  
बतळावा तो किया

रग हो रगसाळ हो थे  
निरतण री सी ताळ हो थे  
वाजन्ता थे घूघरा हो-  
प्रीत तणी पोसाळ हो थे

प्रीत तणी पोसाळ

थारे सग नाचा म्हे ता म्हारे सग नाचो थे  
ढम-ढमक-ते ढोल न बिसरावा तो किया  
बनळावा तो किया

थोडी सी बतळाण करल्या  
थोडी सी भुळकाण करल्या  
लांवा जीवण जातरा है  
थोडी सी सुस्ताण करल्या

थोडा सुस्तायल्या

याने सग राखा म्हे, म्हाने सग राखो थे  
मनडै री मरोड नै समभावा तो किया  
बतळावा तो किया

## सौरम रें द्वार

आप सू मिलाला म्हे, सौरम रें द्वार  
कळिया भुक-भुक भूलै भवरा रें भार  
कोयल जद डाळी-डाळी, गीत तो सुणासी रें  
फूला फली फुलवाडी रगा रग जासी रें  
तितली करण आसी रग रो बोपार ॥

मिमभरसू भर-भर तरवर, हिवडो हुळसासी रें  
मन री अमराई रा तो आबा फळ आसी रें  
वायरियें सू बहकैला नदिया री धार ॥

यादा री पडद्याया घट-घट वध जासी रें  
थोडा सा तपसी दिनडा राना सरदासी रें  
तारा कहै चाद सू आवा हा लार ॥

पन्तै पन्तै सू कू पळ, छान वतळासी रें  
चेहरे चढती चिकणार्दे, वधती हा जासी रें  
हरयो हरया जावन ही, जीवण रा सार ॥  
कळिया भुक-भुक भन भवरा रें भार ॥

## कलियां कोनी रें

मूँ घी रूत रळियावणी पण कळिया कोनी र  
तिड जावें जो तावड वै फळिया कोनी रें

नोलख तारा बीच अँकलो चाद हुवें तो हस बोला  
जुगा-जुगा सू बंद पडयीतै हिवडै री आगळ खाला  
घुळ जावें जो बात सू वे डळिया कोनी र

मोरम मेती फूल हुव तो करल्या गजरै सू मुजग  
नेह नमीली छेल हुवें तो उण रें गाखें सू गुजरा  
भाक्ते भरोखे हाळी गळिया कानी रें

हेताळ् हद बाग हुवें तो बतळावा माळी-माळी  
रूप रसीली बेलडिया सग लपटीजा डाळी-डाळी  
जगत ठगारा ठूठ है कूपळिया कोनी र

सपन सास री पानी-झानी जाणें कितरा गाव बसाया  
सावण भादु सरवर छळक्या फेरु रग्या तोर निसाया  
ममदा रा पाणी पीवाळी थळिया कोनी रें

अटकळ-खटकळ खोल चढे कुण मन-मंडी पैटी-पंडी  
साज सजीली लाज-लजीली कुण आव नैडी-नैडी  
च्यारुमेर त्युहार है रगरळिया कानी रें

तन तापी री तिरसण सागें भरमीजा गाणी माणी  
अूनाळें में मरु भोमीरा हिरण फिरें पाणी साणी  
चढतें दिन रो तावडो दिन ढळिया कोनी रें

# थारो आणो

थारो नही आणो अकथाणो वणग्यो  
काई कोई ओर ही ठिकाणो वणग्यो

साच साच कैवा कै खार नही म्हे  
सावत हा टूट्योडा तार नही म्हे  
आवता अठी नै ब्यू आखता हुवो  
कुण थारे मीठो सो मखाणो वणग्यो

आप नै अढीका म्हे भीड सू वचा  
अकेला अकेला म्हे गवाड सू वचा  
मान—अपमान नै समान समझियो—  
बावळो सो मन हद स्याणो वणग्यो

घाट—घाट जाणै रा पाठ भूलग्या  
अेक रे ही सग रैवा साठ भूलग्या  
यादा मे, वाता मे, सपना मे थे—  
अतस रो आक आक गाणो वणग्यो

## म्हैं तो जाणू

म्हैं तो जाणू म्हारा मन की  
कुण जाणै रै थारा मन की

नदिया समदर सामी जात।  
वात कर है खारा मन की  
चाद रे आभ मे आना  
गत दुरगत है तारा मन की

बयू काई हृद हत ठुकावे  
मत सनमत है प्यारा मन की  
बादलिया मे विजळी भिळमिळ  
गरज वरसै वारा मन की

रूप रास रै गोत गाव मे  
हाट सजै विणजारा मन की  
मदसाळा मे फिर भूमता  
मतवाळी गत सारा मन की

पिणघट रा घट घट पो लेव  
तिरस घणो पणिहारा मन की  
गळी-गळी म गाफल डोले  
पेठ नही रुळियारा मन की

# कुण-कुण नै बिलमासी

कुण कुण रा मन मार-अठतू कुण कुण नै बिलमासी  
निछमी रूपाधार नन तो घणा जणा वतळासी ।

धारी चाल-डाल मे चटका  
धारी बात-बात मे लटका  
जीवन री पणियार हेत री वादळिया वरसासी

छम-छम वाजै पायल धारी  
तीखा दीरघ नैरा कटारी  
सज सोळा सिणगार घणेरी निजरा नै उलभासी

तू आवै हिवडा हुळसावै  
तू जावै जिवडा कुमळावै  
जगत करै मनवार नवेली जठै-जठै तू जासी

तू बोलै इमरत रस घोळै  
तू भाकै रस राग भकोळै  
जासी जिए-जिए द्वार प्रीत री पग थळिया परसासी



जितरी वणी ठणी तू आवे  
 उतरा भोळा हिंया रिभावै  
 रूप-कळी कचनार, ठगोरी मन भवरा भरमासी

लखपत पाव पुजारा थारा  
 धनपत मोल कुतारा थारा

घर-घर भोग लगार अटारया मे आचळ उळभासी  
 लिछमी रूपाघार तन तो घणा जणा बतळासी

# तू गोरी, बा सांवली

अमर-मृत मत चान मगेजए  
एह ठिग छिए छावळी  
तू कस बा सावळी

ओ फागए सागए ई रसी  
आ मावए मन भावए रसी  
रुन आसी जामी घिर आसी-  
चाद मूरज री जागए रसी

रंग रगही रगरेत्रए  
तू कस ग छावळी  
तू कस बा मावळी



## रमताँ-रमताँ

रमता-रमता रग रा घरमी कर बैठे क्यू राड  
आज आदमी मे उगर्यो क्यू काटा आळा भाड

हेत-हताई कठै गई वै, गयो कठै अपणेस  
सूना-सूना क्यू लागै है, गावा बीच गवाड

लीरा-लीरा रिस्ता-नाता बदळ गयो सा भेस  
कुण है कारी देवण हाळो, आवो हेलो पाड

जाण्या-अणजाण्या मिलता ई उमग्याता हिव हेत  
अरै वात बा कठै रही रै, जळ-भुन होवै भाड

हाथ-हाथ रो दुसमो होग्यो, प्रीत गयी परदेस  
टाग अेक दूज री खीच, दात दुखावै जाड

आपा-घापी घणी माचरी हारी घक्कम पेल  
रोत आज री इसी चालरी, खेत सावै है बाड

## सूखा रुख गीला बोल

सूखा-सूखा रुखड़ा रा गीला-गीला बोल  
आ हाटो म ना मिल अर ना बाटा रै तोल

पछी भेर बजावता परभाते री पाळ  
सभया लोरी गावता दे दे थपकी ताळ  
रितुआ रूप सवारती पूहपडा री माळ  
मेघा मोती देवता भर भर ल्याता थाळ

मुधरी वेता बायरो वो घणा बजातो ढोल  
सूखा-सूखा रुखड़ा रा गीला-गीला बाल

किरणा मुजरा देवती ऊगतडै परभात  
सभया साज सवारती रगती म्हारा पात  
चादा घुर-घुर देखतो तारा क ता बात  
रातड नेह लुटावती मोनीडा री जात

दिन पळट्या री बायरो वो भूल गयी सै कोल  
सखा-सूखा रुखड़ा रा गीला-गीला बाल

पळ-पळ पाती गावती रळ मिळ म्हा रा गोत  
डाळा भूला खावती हस-हस भूली प्रीत  
छिण छिण पाती भाडली काळ चकर री रीत  
डाळ हिंडोळा टूटग्या राज रैयग्यो चीत

कुण रह जावें थिर सदा आ नही जगत मे रोळ  
सूखा-सूखा रुखडा रा गीला-गीला बोल

उनाळे रै तावडै छाया लेती सास  
थकियो पथी देवतो सदा जीण री आस  
सूखो देखत माभळयो माथै मार मजस  
फळ पाती म देवतो बो दे आज गडास

फळ देवा रो फळ मिल्यो मिनखा मे आ पोल  
सूखा-सूखा रुखडा रा गीला-गीला बोल

# लाव सू लस्कर बध जासी

जात री जाजम नै मत फाड रयात री बात उधड जासो  
वात रै डाळी सू टूटचा रूख पर पछी नी आसी

समदर री लरा ऊचो है  
आधिया जोर जणावै है  
मोकळा मगर फिर चौकर  
गिगण नै घात लगाव है

नाव नै मझधारा मत छाड तीर-तट सूना रह जासी

गनाही इनिहासा री द'र  
उगाही कद ताई करसी  
बुरजडी हुई भाखरा ढेर  
चिणाई अवं किया करसी

गोखड गाता रहिया गीत, रावळ रावळ रम जासी

भाक मत पाछा इतरो वीर  
त्रागल पय चूक पड ज्याय  
पूज मत इतरा भोम्या भेर  
पुजारी ई वण कर रह ज्याय

नीच मे इतरा मत गहळीज, मूरज री जात बजळ जासी

अघारा धार अघारा है  
बता बूकण सू के होवै  
चार ई चोर जमारा है  
बता भूकण सू के हावै

मावळा वोल्या ई मत जाय, भरम रो भीता ढह जासी

आठ अकट सू भावै गाढ  
तीन तेरा ई निबल वणै  
सप सू साख सगई है  
साठ सगळा ई सबळ वणै

तार मत न्यारो न्यारो ताण, लाव सू लस्कर बघ जासी

भूजळ मन मे हुवै उजास  
उजाळो घर भाई बण जाय  
हाथ सू हाथी थकै पचास  
सबळ रा राधी जग बण जाय

डील नै राळो मती वणाय, कपट रा सरवर सुप्त जासी



## जद कुण गीत लिखैला

जद कुण गीत लिखैला, जद कुण गीत लिखला  
सुर रो साख अडाणी मेल्या, किए विध साज मजैला

धमाचीकडी मे उळभयोडा  
मिनख मिनख न भूल गया  
रस रामत रा रास गया सै  
महक गई अर फूल गया

पणघट जाता घट भरल्याता, कवळा लीग डरैला  
जद कुण गीत लिखैला, जद कुण गीत लिखेला

कितरो ऊडी अबखाई है  
कितरा किरियावर पाळ है  
डगर सा दरद उघाडै है  
समदर सा धाव रुखाळै है

घरती सू ले अबर ताई, बदरगी रग रंगेला  
जद कुण गीत लिखला, जद कुण गीत लिखला

हेत हताई मोत मितार्ई  
 प्रीत पुताणी काणी है  
 भायप री पहचारा गई  
 अब गा खीचा ताणी है

बिम रा बीज, बीज राखै तो बिम री बेन बबला  
 जद कुण गीत लिखैला, जद कुण गीत लिखला

सावण भूल फागण फूलै  
 ना घूघर भणकार हुव  
 भेदी मुळकै हिंगळू हरख  
 ना मोरठ सिएगार हुवै

धग बजाता, रग जमाता, त्रिरला मिनग्य मिलैला  
 जद कुण गीत रचला, जद कुण गीत रचला



## अंधारों

अधाग री जूनी जागीर चानणी आग्या पटक है  
रात मे अवलख रो असवार दिवस भर माथा पटक है

मावज मे खीची दो भीत सुरज नै भाकण नी देव  
‘वाड’ र जाळ मे उलझयो निजर नै नाखण नी देव

हुकलियो भिभरिया भरदे हनाया उदरिया आवै  
माकडी खडी करै अरदास मफला काचरडो गाव

सी’ल भू सगपण करियो है कूट सरणाटो लटकै है  
रात मे अवलख रो असवार दिवस भर माथा पटक है

काजळी नणा कामणगार साभ सैना मे समझावै  
उछलती आगण तारा देख निजारा कर नेडो आवै

चाद सू घणा जलम रा वर मुकदमो पीडया सू चाल  
घरा तो वावण नै दोनी निसरडो हासल नी घाल

विघाडी आठें तक देवै मुघाडै सासा घटक है  
रात मे अवलख रो असवार दिवस भर माथो पटक है

गढा री जूनी बुरजा बीच मलमली सपना बतळावै  
मै’ल ७ वद दरूज आय छेड चमचेडा बिडदावै

क मुजरा कर वूढलो भस रूपाली निजरा वरसावै  
पातळी कडिया चिमनी देख दिसावा भपटण न आवै

अमावस मोटीडा त्यूहार छेलियो घर-घर भटकै है  
रात मे अवलख रो असवार दिवस भर माथा पटकै है

दायज आई जाजम ढाळ, दासिया बाजोटा ढाळै  
थाळ घर नै ओछाड उधाड पुराणी लीका नै पाळै

सावतो प्याला री मनवार सरवरा सखरी कर जाणै  
आगळा खुल नही जद ताण मुछाळा मौजाई माणे

भाक जद लेवै भाण सुराख हडभड भाग भटक है  
रात मे अवलख रा असवार दिवस भर माथा पटकै है



# रोसनी रैं बारणैं

रात बीतगी ज भोर आयगी आ जाणके-

किरण किरण कारण भाकता रह्या म्हे  
रोसनी रैं बारणैं भाकता रह्या म्हे

आधळा अधारा सू टळता'र टाळना  
राज री मुराज री साम नें सभाळता  
बाघ वानरवाळ द्वार-द्वार पे अडीकता

आगणा मे माडणा माडता रह्या म्हे  
रोसनी रैं बारणैं भाकता रह्या म्हे

तिरस मनड नै तो वादळ री आस दी  
थनियौड पर्या न मूरज री माख दी  
मानली क मजला प पूग र्या, पहुच र्या

वदम-वदम फामला नापता रह्या म्हे  
पड पड पावडा नापता रह्या म्हे

जीत री पिछाण मे रोभता रिभावता  
खुसिया रा धूषरा सुणता सुणावता  
फला ही फूला रा सपना सजाइया र

जागिया तो गावता'र नाचता रह्या म्हे  
किरण किरण कारणें भाकता रह्या म्हे

# दौड दडवडा

मन रा अबलख घाड, तू दौड दडवडा  
खुल्ला पटिया खाड, तू दौड दडवडा  
दडवटा दौड दडवडा

पोलै पोखर पाळ, मिल जिनरो ई पाणी  
तक्सी कितरी ताळ, अर खाडी जिनगाणी  
पुटठा रै परवाण, नाप ले नाप अलेखा  
पोडा पोड उघाड, वरा गाडी हमाणी  
वधी गगामा तोड, तू दौड दडवडा  
दडवडा दौड दडवडा

खुद री खाल तपाय, 'क खूद रा खेत मिलला  
जुध रो भाव जताय, 'क हेत समेत मिलला  
नासा सास हिरौळ, जीत रा गीत उगीज-  
हाफळ ना डफळीज, क कई कुमेत मिलला  
मचरी हाडा होड, तू दौड दडवडा  
दडवडा दौड दडवडा

आखडजे मत भूल हात तो मजला आ'गी  
भरमा मे मत भूल सोवता जग तू जागी  
ऊचो भाखर भोम पथ मे खाड घणेर

मूळ मिल व फूल, जीव लग जाज भागो  
 घर वू डिया छ़ाड तू दोड दडवडा  
 दडवडा दोड दडवडा

पायन रो भएवार जात रा ढाल मुणला  
 मदभानी मनवार, प्रीत रा काल सुएना  
 जे जासो तू जात, जगत री अवछी वाजी-  
 घर-घर वानरवाळ, गान रा बाल सुएला  
 अत्र न भागे जाड, तू दोड दडवडा  
 दडवडा दोड दडवडा

जुग-जुग रा जू झार मूरज र माथ तपीज  
 गज माती गळहार मान रा थान थपीज  
 रामो तू करडाण, समक रै सगळा निवला  
 मयना री पहचाण, मीत सू रास रमीजे  
 मारग मजला माड तू दोड दडवडा  
 दडवडा दोड दडवडा

# गीत

म्हे तो प्रीत बघाई अणहद, पण थे घणी उदामी दा  
म्हे तो समदर कर्या निछावर, पण थे नदिया प्यासी दी

पथ-पथ मे नैण बिछाया, नैणा करी उडीक घणी  
आवणिया कैर नी आया, दरस दुसमणो करी घणी  
थार खातर तन-मन दाइया, हिवडै हेत तलासी दी ।

आ नै पूछा, वा नै पूछा, पूछ-पूछ थाक्या जावा  
अतो पतो नी मिले कठैई, ठूढ-ठूढ भाक्या जावा  
दोरो-दोरो लगै जमारो, था दोधार चला सी दी ।

वादो करणो फर न आणो, आ तो बात अजब री है  
भूल-भूल के याद करा म्हे, म्हारै गरज गजब री है  
इमरत साटै, जहर पिलाक, थे तो पीड जगासी दी ।

मुख बिसगयो, चैन गमायो, नैणा नीद नही आवै  
हिवडै सूळ उठ आ जाण्या, कठै-कठै आवै-जावै  
म्हारै खातर मू घा हुयग्या, ओरा हाट लुटा सी दी ।



म्हा समभाया समभ नी आव, वा समभाया समभ करा  
 अपणी हिन अणहित नी जाणो, थे जाना नी गजव अण  
 म्ह ता वा हिन वाग लगाया पण ये साख गमा सी दी ।

बितरा दिन री रूप रास है, इण रा वड गुमज करा  
 आ ता तार-तार हाणी है, वण ठण, कई वघेज करा

म्हे ता वारे सुरमा सार्यो, पण थ निजर घुमा सी दी ।  
 म्ह ता प्रीत लुटाई अणहद, पण ये घणी उदासी दी ।

## मूल कठें अर डाल कठें

जितरी जडा जमी मे होसी उतरी साख बघीजैला  
जितरी रुई कतेरण राखे उतरो सूत कतीजैला

जिएण पिणघट पर प्रीत न पावै उण घट पाणी पीणो के  
मन रा माद मना मे मुरभै, इसो जमारो जीणा के  
बतळाया सू बोलै कोनी काम पड्या वयारी काट-  
जा रै मन री मगजी फाटी बीनै पाछी सीणा के

जितरा पाट पडोसी रसी उतरा मया पिसीजैला  
जितरी रुई कतेरण राखे उतरो सूत कतीजैला

आसमान पर खेत फळै नी, अ तारा थारा कोनी  
समदर छोळा हेत बघानी, अ थारा थारा कोनी  
ओस बूद कद माळा पोवै सपना किए रा साच हुया-  
छाया रा चितराम बावळा उणियारा थारा कोनी

जितरी नजर भवीजै भरमै, उतरो हियो तपीजना  
जितरी जडा जमी मे होसी उतरी साख बघीजैला

इए जग रो है उलटो धारो, बोल कठे अर चाल कठे  
 गठजोड रो गाठा उलभै कोल कठे अर ताल कठे  
 काया तो कागद रो माया जो लिखणो सो लिख देर-  
 मन रं बडलै साख हजारु मूळ कठे अर डाळ कठे

जितरी तिरस बुझाणो चासी, उतरी तिरस बघीजैला  
 जितगे रुई कतेरण राखै उतरो सूत कतीजैला

पाणो धारा नाव डुबोदे, पण नोहा रो जीवण पाणी  
 उड उड आवै घणा पतगा प्रीत जोत मे बळवा ताणी  
 मरण माच नै सा जग जाणै पण जीवण हित जुघ लडै  
 प्रीत पागळी लूलो गू गी, पण इए स् है खोचा ताणी

जितरा सबद भाव मे भीजै उतरा गीत लिखी जैला  
 जितरो जडा जमी मे होसो उतरी साख बघीजैला

# तन तो तोला मासा रें

अमर सदा बाणी रो जोवन, जीवण समझ तमासा र  
बोझ घणो मन रो भारी, ओ तन तो तोळा मासा रें

बीती सू परतीती राख, आगत आवभगत विसरें  
मूढ कळपना रा तिरसकू, सदा अधर-वम म बिचरें  
घरती पर आखड बाळा क्यू, बात करे ऊँची-ऊँची  
सपना री मगत सोविणया, किरारें पथ उजास करे

उलझी घणी अकल ही ज्यारो, किस बिध सुळभै भापा रें  
बोझ घणो मन रो भारी, ओ तन तो तोळा मासा रें

सूरज इतरो ना सिलगावै, पण तारा उतपात कर  
रण अमावस रैवै कुमनी, पण पूनम ई घात करे  
रग फूल गो रमै न गग-गग, सौरम राज करे मनड  
देव वासना रा भूखा पण, मिनख भोग री आस करे

आसा अथक बघावै आगै, पकडै पाव निरासा र  
बाझ घणो मन रो भारी ओ तन ता तोळा मासा रें

बाता मे बिचभीजै, ज्यारें तन मे ताप रयो कानी  
सैना मे समझावे, ज्यारें हिवडै हाथ रयो कोनी

निजरा घणो तीसळें वारो, नैणा वदे न रास रयो-  
मजळा मूधी लागें, ज्यारें पगल्या थार रयो कोनी

खेनणिया जीतें जग वाजी, कद न जीते पासा रें  
बोभ घणो मन रो भारी, ओ तन ता तोळा मऽमा र

आगळ ढकी, जिका रें मन रा, पाप पडत खुलता देख्या  
ओटी आग राख रें ओटें, वारा तन बळता देरया  
जितरा कसणा काठा बाध्या, उतरी लाज उघड आई-  
वाधी पाळ जिका घाग पर वारा बध दुळता देख्या

मिनख सदा स्याणप मे जीवें, पण कुचमादी सासा रें  
बोभ घणो मन रो भारी, ओ तन ता तोळा मासा रें

# रुत नै रुजगार मिलैला

थोडा सा काटा छाटो रै  
फूला रो मेटा फाटो र  
सौरभ नै घर-घर बाटो रै  
सुर नै सिएगार मिलैला  
रुत न रुजगार मिलैला

थे राग रागणी टेरो रै  
गीता री गमक उगेरो रै  
भावा रा बीज बिखेरो रै  
घरती नै धार मिलैला  
रुत न रुजगार मिलैला

औ ग्राज-ग्राज ई साचो रै  
वहते बायरिये बाचो रै  
मदवा मद छुकिया नाचो रै  
पग नै झणवार मिलला  
रुत नै रुजगार मिलैला

पी जावा वै पणिहारा है  
 दिख जावो व उणिघारा है  
 लुट जावा वै विणजारा है  
 विकिया वीपार मिलला  
 रुत नै रुजगार मिलेला

भवरा नै मद भरमावा र  
 कळिया । गळ लगावा रे  
 कायल सू हस बतळावा रे  
 गळिया गुलजार मिलला  
 रुत नै रुजगार मिलेला

तारा री मैफन थारी है  
 थारी ई आ फुलवारी है  
 घरती ता अखन ववारी है  
 मन न भावार मिलेला  
 रुत न रुजगार मिलेला

## प्रीत रा मद

लीरा-लीरा है जमारो, सीया तो करो  
थोडो-थोडो प्रीत रा मद, पीया तो करो

नैणा री भामा मे जग भर री वाता है  
रग वर री वाता है मन भर री वाता है  
अण बाली-बाली मे वाता कीया तो करा  
लीरा-लीरा है जमारो

हिवहै र हेताळ् री अडीक करणी है  
हेत रो हताई न बघीक करणी है  
जागती आग्या मे जोवन, जीया तो करो  
लीरा-लीरा है जमारो

सास रो कमाई तो घटती घट जाणी है  
रूप री लुणाई आ लुटती लुट जाणी है  
मैफन है मनवार प्यालो सीया तो करो  
लीरा-लीरा है जमारो



भाकतड भराखा जाली, भाको तो सरी  
 नेहू सू नागाडी निजरा नाखा तो सरी  
 गाफल गुलजार गळिया गीया ता करा  
 लोरा-लीरा है जमारो

अव आवै अव आवै पै आ वैम तो पाळा  
 नित आव नितरा ही वै वाटा ता न्हाळो  
 पीपली पसवाडें भाला, दीया ता करो  
 लोरा-लीरा है जमारा

# आबो फलग्यो अँ

आबो फलग्यो अँ कोयलडो समझ गई आ बात  
चिडिया चहक चहक चरचावै फैल गई आ बात

बदल गया रंग रूप बदलगी भासा ई सगलो  
पथ पथ पगडडो सारै कह देवै आ बात  
आबो फलग्या अँ

सौरभ सीना ताण नीकली गाफल सी डोल  
डाळी-डाळी अँ सखी सहेल्या बतलावै आ बात  
आबो फलग्यो अँ

कितरी इतरी इतरी तितली चीकूटा गरणावै  
डोढ डोढ मे डोढ कागला दुलडावै आ बात  
आबो फलग्यो अँ

माळी रै मनमोद बाग री साख सातरी है  
छाने छाने कनकतिया मे कुण कैवै आ बात  
आबो फलग्यो अँ

सुणै सूवटो मैना बाचै पाती प्रीत लिखी  
बायरियो बलता कलभलतो कह देवै आ बात  
आबो फलग्यो अँ कोयलडो समझ गई आ बात

## “क्यू”

थारै सू बात करा रहै खिलत गुलाब री  
आगणै री चानणी सू मिलत जवाब री

नदिया री धारा मे वीणा सी बाज क्यू  
सागर री लहरा स नचती सी भाजै क्यू  
हसतो सो फागणियो गातो सो सावण क्यू -  
बिजली री वाथा मे बादलिया गाज क्यू

थार सू बात करा रहै खुलती किताब री  
आगणै री चानणी सू मिलत जवाब री

काळ अधियार मे, निजरा मे आवै क्यू  
कोसा री दूरी नै, नेड सी लाव क्यू  
सूने मे साख भर, हिवडै हिमळास करै-  
खाली सा जीवण मे, खुसिया भर जावै क्यू

थार सू बात करा रहै मन रै हिसाब री  
आगणै री चानणी सू मिलत जवाब री

कुण कुण ने बिलमासी

सगळी तसवीरा रा एकसार चहूरा क्यू  
पथ तो पचासा है एक साथ डेरा क्यू  
मौसम री मेंदी न बार-बार बाटणिया-  
रूप री तिजोरी प पाप रा ही पहरा क्यू

थारै सू बात करा म्है तन रै रिक्काव री  
आगणै री चानणी सू मिलतै जबाब री

## आथ मती

उगिया पैली आथ मती, जाग्या पैली सीवै ब्यू ?  
चात्या पैली थमै मनो, ढूढया पैली खावै ब्यू ?  
जीवरा जीणो है इमरत पीणो है

जीवण लाबो पथ उधारै पगा कदे नी पूग सक  
जीवण जवरो जुघ, अटकती सासा कदे न जूझ सकै  
मजला मू धो, मरद, घणा ई खाडा खोचर माडा रै-  
जीवण तिरतो फूल, उफणती बाढा कद न हूब सकै  
साध्या पैली कोड मती, राध्या पलो ढोळै ब्यू ?  
बधिया पैली तोड मती, नितर्या पैली खोळै ब्यू ?  
धीरज धीणो है, कातर सीणो है

धाक्या धाक दवावै दाव भाग कदे न बढण दे  
भाग्या, भाग मची सुणता हो दुसमी कदे न चढाई दे  
हारयोडा, ठार्योडै लाही वामू कुणसा प्रीत करै-  
जाग्या, जाग जाणता ई जग जीत गीतडा पढण दे  
मुळभया पैली उळभ मती, तपिया पलो पूजे भ्यू ?  
उघट यां पैला ढरै मती, गिलिया पैली मुरभै ब्यू ?  
समद बिमाणो है, रतन रमीणा है

कुण कुण नै बिलमासो

रोहो रो वण फूल मुरझणो आद्यो नही कहीजै लो  
घावा रै तिरसूळ खुरचणो नितरा नही सहीजै लो  
सायत रा सो अरथ हुवो पण अेक अरथ तो साचो है-  
ससतर रै सामेळ जाता पाद्यो नही रहोजनो  
जोडया पैली नोड मती, हसिया पैली रोवै क्यू ?  
फळिया पैली फोड मती, काटया पैली बोवै क्यू ?  
बगत नगीनो है, रगत रगीनो है

करतव काठो रिया, जमारो झुकसी हृद सनमान करै  
काटा सू पगथळिया बीघे, जद मारग अभिमान करै  
सोया सू तो साख घट पण जाग्या जगमग जलम हुवै-  
जस रा दिवला च्यारू कू टा पीड्या लग गुणगान करै  
उफण्या पैली ठार मतो, जीत्या पैली हारै क्यू ?  
उरस्या पैली सा'र मतो, जलम्या पैली मारै क्यू ?  
समर सलूणो है, दरद अलूणो है

## हैं खीचड़ी खजूरा पैं

तू भूलियो मजूरा नै, अर छोडदी हजूरा प ।  
आतो पकतो सी पकसी, है खीचड़ी खजूरा पैं ॥

बा धार अटकरी है, ब्यू राह भटकरी है  
सगलाई जाण है—किए आख खटकरी है ।  
तू ताफड तोड करै—फेरुई भूख मरै,  
तू निवळ अबोलो है अब काई जोर करै ।  
नोवा नै कुण पूछरे, है जद निजर कगूरा प ॥

अब कुण सू बात करा, कुण कुण नै साथ करा  
मे अपणी ही सोच—कुण न समझात करा ।  
थारो तू थारो है म्हारो म्ह म्हारो है,  
है पेट घणो पापी, सगळ ओ धारो है ।  
ना हो बीज बण कोई टपकै लाळ अगूरा पैं ॥

रतना री डाबी दी, घर थाळ रकाबी दी,  
तू कितरो भोळी है—चोरा न चाबी दी ।  
लूटण ने डेरा है, पाचू पचसेरा है,  
अब शाह नही कोई, सै अेरा गेरा है ।  
तू बागा री रखवाळी, ब्यू छाड दी लगूरा प ॥



## म्है जाणा

म्हानै कितरी पोणी है  
म्है जाणा

इए मे कितरो जहर घुळयो, अर  
कितरी चीणी है  
म्है जाणा

म्हारै मन री तिरस अनूठी  
पीता पाण बधै  
वाता—वाता मे कह देवै  
पाजे कदै कदै

मन री भगजी कितरी फाटी  
कितरी सीणो है  
म्है जाणा

मनवारा स मन नी धापै  
पुरस्या ई सरसी

लाज मर्या तो मर भर जास्यो  
कुण काई करसो



कुण कुण नै बिलमासो

घो जलम जुलम करतो ही रहसी  
चादर भीणी है  
म्हे जाणा

ये नटस्यो तो घटसी थारी  
म्हे तो याग हा

ये नद हो तळ ताळ तळया  
म्हे मझघाग हा

आ बदरगी रग, रग जाणै  
आ रग भीणी है  
म्हे जाणा

## लुभायां लेगी रँ

काई-काई कवती काई कंगी रँ  
लाल-नाल लाली तो लुभाया लेगी रँ  
डाळ-डाळ आवै जावै चीडी री सुणो  
उडयो-उड्यो आवै वीरै भीडी री सुणो  
उड-उड कर उडतोडी उडाया लेगी रँ

वाग-वाग री बहारा बण बावळो फिरै  
हेर-हेरती हिरण्या, नै उतावळी फिरै  
कूद-कूद कूदती कुदाया लेगी रँ

मैं ना-मैं ना कैया मैं ही नै बुलावती  
फरर फर फराट सू भाळा नै भुळावती  
तोता-तोता बोल 'र बुलाया लेगी रँ

टरर-टरर-टरर कर तीरा पे तर  
डरर-डरर-डरर कह जराक नी डरै  
तिर-तिर तिरती तिराया लेगी रँ



## माणस

माणस ! तू पारस साचोडो, जीवण नै सोना सू भरल  
अेक नदी पोखर सरवर के, तू तो सात समंदर तर लै

थारी हसणी, मन हरखाई  
थारी गाणी गरव गमाई  
तू खुमिया रो बडो खजानो-  
थारै हाथा घणी कमाई

जीत सदा थारी अगवाणी, सातर पातर कमतर कर ल

तू सौरम री साख बघाई  
रगा री मँकल महकाई  
थारी सासा सरगम रा सुर-  
पर सेवा, परसेव बहाई

दूजा रै हित आपो मेटी, इतनी वात हिया मे धर लै

तू हामळजे हेत हताई  
साची साख सनेह सगाई  
प्रीत पाळ परथक प्राणी सू -  
सागै सरसी सत सवळाई

गुण मू गरज, गरज गुणी जन सू गिरा गिरा ओगण सारा चरल

काटा सू कलिया चुण ल्याई  
 भाटा सू माणक बिण ल्याई  
 जहर भरी जगती रै खातर-  
 इमन्त रा सौ घट भर ल्याई

सुख रा साज सजावण साथी, जण जण रोतू सकट हर लै  
 माणस ! तू पारस साचाडो, जीवण ने सोना सू भर लै



# आफत में आदमी

जमें ना जमी जग, नापती फिरें  
आफत में आदमी हापती फिरें

ताकत तोली घणी, मैणत मोली घणी  
ओ घरती री घणी, कापती फिरें

मिलै ना मजूर र होयगा हजूर सै  
अकली खजूर, द्याव भापती फिरें

पूछलै गरीब नै देखलै अमीर न  
गमियोडै घोर नै, भापती फिर

भूल तेग धार न, वीरता र वार नै  
धूळ धो धार पग, चापती फिरें

छोड प्रीत रीत नै, शीत नै सगीत नै  
रहिमी न भीत निजर टापती फिर

## बाचा दोय घडी

जहर भरी सारी जगतो मे, बरसीजं जहर भडी  
कोई इमरत प्या देव तो, म्हे पील्या दोय घडी ।

काटा हो काटा रो काकड, काटा रो ही वसतो  
महकतो फूल मिल जावे तो, म्हे देखा दोय घडी ।

थासू वासू वात करे वै, म्हासू वयू न करे  
वै अण मोळें ही वोलें ता, म्हे मुळका दोय घटी ।

नटणी ही नटणी सें जाण, नटणी ही सें समझ  
कोई हा ही भर लेवें तो, म्हे हरखा दोय घडी ।

जीवण जवरो जुघ जाणीयें, तावडियो तपे घणी  
ठडी छावळी मिल जाव तो म्हा बैठा दोय घडी ।

पोथ्या की पोथ्या लिख भेजें, पण कोई नही पढे  
वै आळो ही लिख भेजें तो म्हे बाचा दोय घडी ।

## हार मती

हार मती र मरद माया, पना बाम का जियागानी ।  
लोहा जाव द्याद ट घा, गाव गावनी जियागानी ।

ध्यावग व व गुफागे पण गाव पवग थठ मती ।  
मारग घागा, मजसा घापी, घाग मेव थठ मती ॥  
जाम जयागा रग मरगानी, मगा, ह्यापनी जियागानी ।

वातर वातर जाग जाट नू, सांग मोरणा दरो जरी ।  
पेट पट पाव-टा परता, जोत हूबसी सरा सरी ।  
समभ समभणा घागे है रे भरम भावती जियागानी ।

घान्डिया ना कर ममळगा, समळ ममळ माग थपती ।  
घुटन रा भतवार हूव थ चढे पट पट पट चढती ।  
धविमा तो धिर धार हूवेला, चाप, चापती जियागानी ।

पद्यतावो मत कर गफलत री, मुरज उगे जागे जद ही  
बीती बीती समझ बीतगी, आसी वा आसी अब ही  
घणो पडी है, घणो बडी है, नाच नाचती जिनगाणी ।

तू किएमू कमती कोनी रे, तू सा'सू बघतो बघतो  
तू किए सू पाछै कोनी रे तू सा'सू आगे बढतो

हीण भाव री भूत भगादे, जीन, जीवती जिनगाणी  
दीडी जावै दडा छट आ, नाप नापती जिनगाणी ।



## ऊ ट डूगरा नीचै आया

मागस करी गुमेज, मतो तू पगा-पगा पर है अवखाया ।  
भरम भाव री भेद खुलला, ऊट डूगरा नीच आया ॥

मत इतरी इतराव मनड म्हाने धडगो वाडा बडगी ।  
अमल अलेख सरीरा उपज, कहदे किसे किवाडा जडगी ॥

आ ता आपा हो जाणा हा, घाळा री ही काळो छाया ।  
आखडता नै ज अखतासो, तो तू किए विघ समळ सकला ॥

वा रै पाळा खोदे खाई, थार निस्च कूप खुदला ।  
तू कद सीतळ साळा सासी वान तपते ताल तपामा ॥

अजब गजब है लाग भायला, अक्रेक अक्रेक सू है इदकाई ।  
खुद नै खुदा वणा मत लीजे, नीतर होसी जगत हसाई ।

थारै गोता जद रस आसी, सा'र साग सुर मे गाया ॥

चाले वाने मजला मिलसी, वित चाल्या कद पथ कटे ॥

आस पिया वद तिरस मिटी र, सबदा सू कद भूख मिटे ।  
दूध पिया हो पेट घापसी, किया घापसी गाय गिराया ?

## क्यूँ दोस कबीरा पै

राणोजी रुसै तो कर रोस न मीरा पै ।  
जग उलटै वास चढे, क्यूँ दोस कबीरा पै ।

अब साच सरभगी है, झूट दरवारा म  
लूटणिया लूट करै क्यूँ दण्ड फकीरा पै ।

सोने रा सपना है, माटी रो हाडी मे  
बेला रा बीज नही, मन मर मतीरा पै ।

ठाला भूला टसक, जाजम पर जमरघा है  
मझधारा जूझणिया, डूबै है तीरा पै ।

सुख रै सामैल तो जाणौ ई सै चात्रे  
दुख रा दरदीला सुर, कुण सुणै मजीरा प ।

जग उडै अकासा मे, मन मरजी भागै ह  
क्यूँ लोग इस्माई है, वै चल लकीरा पै

काजळ ई काजळ मे, घोळा नै कुण धारै  
काचा ही खावणिया, क्यूँ मेकै खीरा पै ।

## बात

थे जाणौ अर जाणा म्हे ही, थार म्हारै कितरी बात  
कुण कुण नै दया साफ सफाई, जितरा मूडा उतरी बात  
दो हिवडा री हेत हथाई, जणा जणा री चढे जवान  
सळ नै तो सळ ही रैवण दयो, अब तो सारै निखरी बात ।

प्रीत रीत पय भीत देखता और देखता हस वतलाण  
लोणा रै बघगो अबखाई, म्हे तो जाणा इतरी बात ।

थारै खातर तन मन थारा, धन सम्पत्त सू दे सनमान  
पण थारी ना समझी सू ही बीच बजारा बिकरी बात ।

गळी गळी मे बेळ कुवेळा, आणौ जाणौ है निरसार  
समझा हा पण समझा कोनी, आ तो म्हारै नितरी बात ।

भोळा री भोळप तो देखो, भरी भीड मे बोला बोल  
च्यार दिना री जिनगाणी मे, लुक छिप करस्या कितरी बात ।

मन मे के मजमून देह रै दरपण मे आज्यावै सार  
ओले छाने बात करा अर चोड घाडे दिखरी बात ।

थारी ना सू हुवै उदासी, थारी हा, सू हरख घणी  
थारै निरखण री निजरा सू नखरा कर कर निखरी बात ।

## सोरठा

मालण त्यायी फूल, ओडी भर्या वजार मे  
भोळा करदी भूल, फूला रें वदळें बिक्या  
मालण मत कर मोल, फुलडा भरदे खोळ मे  
सोने-चादी तोल, जोवण कोकर थामसो  
मालण थारा फूल लाग कितरा फूटरा  
तोड्या कोनी सूळ, नैणा मे चुभसी घणा  
मालण डाळ मरोड, हिवडें मे हरखी घणी  
फूलडा-फुलडा तोड, छोडी जोवन छावळी  
मालण सोच्यो बीज, रुत आई वेला रगी  
वरसाळे मे भोज, भूल फूल भोला कर  
मालण मत कर मोल, मीको है बिन मोल दे  
समो गमावें तोल, सूक्या बिकै न फुलडा  
मालण थारें वाग, आवण री मनस्या घणी  
फूला छायो फाग, जोवन छायो भुरमटा

## ਸੌਰਠਾ

ਬਾਝਪਯੈਂ ਰਾ ਮਾਧ, ਦੇਖੈਂ ਪਯਾ ਦਹਨੈਂ ਨਹੀਂ  
ਜੋਬਨਿਆ ਰਾ ਹਾਥ, ਹਾਥ ਉਠਾਵੈਂ ਅਯੁਗਿਯਾ  
ਬਾਝਪਯੈਂ ਰੀ ਬਾਤ, ਰਮਤਾ ਥਕੈਂ ਨ ਰੇਤ ਮ  
ਜੋਬਨ ਥੇਲੈਂ ਧਾਤ, ਰਾਤ੍ਯੂ ਚਾਦੋ ਤਾਪ ਦੇ  
ਬਾਝਪਯੈਂ ਰੀ ਬਾਤ, ਮੀਠੀ ਲਾਯੈਂ ਮੋਕਛੀ  
ਜੋਬਨ ਐਂਡੀ ਜਾਤ, ਬਾਤਾ ਸੂ ਬਿਲਮੈਂ ਨਹੀਂ  
ਬਾਝਪਯੈਂ ਰਾ ਬੋਲ, ਲਾਖਾ ਰੈਂ ਵਿਚ ਬੋਲ ਦੇ  
ਜਾਬਨਿਆ ਰਾ ਕੋਲ, ਧਾਨੈਂ-ਧਾਨ ਸੀ ਕਰੈਂ  
ਬਾਝਪਯੈਂ ਰਾ ਮੀਤ, ਮਿਲੈਂ ਨ ਹੇਯਾ ਮੋਕਛਾ  
ਜੋਬਨਿਆ ਰੀ ਪੀਤ, ਪਛ-ਪਛ ਮੇ ਪਾਛੀ ਪਛੈਂ  
ਬਾਝਪਯੈਂ ਮੇ ਥੇਨ, ਮੁਦ ਮੁਦ ਨਿਰਲ ਮਾਭੀ  
ਜਾਬਨ ਕਰਦੇ ਜੇਛ ਤਾਛਾ, ਦ ਆਛੀ ਹੁਵ

## बात कर बादल सू

सावण री सौगात, बात कर बादल सू  
वरसैला वरसात, बात कर बादल सू ।

अळगा है अळगाव मीत मन मानीता  
सो वाता री बात, बात कर बादल सू ।

जे तन मन मे आग, अणूती भळ काडै  
बुझ सी अवकी स्यात, बात कर बादल सू ।

कामणिया मन कोड, पीध पण परदेसा  
होमी सगळो साथ, बात कर बादल सू ।

हीडा री हमजोळ, तीज री तीजणिया  
लहऱ्या मे लहऱात, बात कर बादल सू ।

विजळी तणी वणाव, नाच री नाचणिया  
मन ही मन मुस्कात, बात कर बादल सू ।

मिलण री मनवार, चार वै वयू करसी  
आवेला अधरात, बात कर बादल सू ।

## थे आया

थे आया मन मोसम बदळे,  
तन धारै तरुणाई  
पो 'र घडी मे, घडी पला मे  
समै प्रीत सरणाई  
सास सास सूरापण समळे,  
प्राण री गत न्यारी  
काना मे रस राग घुळीजै  
नैणा मे छिव थारी  
पग मे निरतण घूम मचावै,  
रगसाळा जग सारो  
हाथा मे मैदी मडजावै,  
होया सागो थारो  
घरती उठ असमान नापले,  
चादो वोले म्हासूं  
समदर कोड किलोळा थिरकै  
वात करा जद थासू  
जीवण साची जीवण लागै  
हरखा हेत हताया  
सो बोता री अेक बात है  
सै किरतव थे आया

## मुक्तक

दिवला धारी जोत सफळ, जद आय पतगो बळ जावै  
फुलडा धारी सौरम रै मिस, आय भवरडो बघ जावै  
कोयल धारा गीत फळें जद, वागा री कूपळ मुळकें  
चादा धारी रूप सफळ चितराम बटाउ बण जावै

चादो आवै म्हारै आगण भाकें आघी रात का  
झिल मिल तारा नीद उडावै, भरम भरै मो भात का  
रळमिल नाचै हिरण्या किरत्या, मोद करै नभ आगणे  
मन रो बात मना मे राखै जाय छुपे परमात का

सरवर छळकें निरमळ पाणी, आवै साथण नाचती  
पगडढी पर लिह्या पोव रा, प्रीत गीतडा बांचती  
बिन प्याला मतवाळी होवै, लहर-लहरसू बोलती  
तू सरवरिये तिरसी, रंगी, रंगी नीर उछाळती

काळी घोळी वादळी तू बिन वरस्या मत जावै अ  
सूखें खेता बोज फळ ना मतना घरण लुकावै अ  
घणै हेत री घणी तपन सू नैणा तातो पाणी अ  
कीकर सीचू इण पाणी सू प्रीत बीज बळ जावै अ



आ' नै देखो वा' न देखो  
 छान माने सा' न देखा  
 अक बात पण माना म्हारी-  
 वे मतलब ही का 'न देखा

आ' सू मिलिया, वा' सू मिलिया  
 साच माच मे, था सू मिलिया  
 बो मिलणी वे मिलणी बहैगो-  
 जद जद ही म्ह म्हामू मिलिया

जै मिल जयाता आप अठे, कितरी बाता कर लेता  
 वे मतलब ही हस लेता हस हस डुसक्या भर लेता  
 जुग बरसा री के कहणी, ओ समै पळट जानो छिए मे  
 सो सो जीवण जी लेता, सो सो जीवण मर लेता



# राजस्थानी नार हू

जुगा-जुगा सू इए फरती र, जए-जए रो रखवाळ करू म्हे  
दुख नै सुख मे बदळ सवारू, पळ-पळ रो प्रतपाळ करू म्हे

सिरजन हू, सिणगार हू  
निरतण हू, भणकार हू  
भीरा रो इकतारो हू  
जोहर रो अगारा हू

पदमण करमवती रै सागै, सगपण मरण त्युहार हू

राजस्थानी नार हू

राजस्थानी नार हू

वीणा पाणो रो वाणो वण, जग-जग मे बिस्तार करू म्हे  
लिछमी रूप धार धरती पर, अन-धन सू भटार भरू म्हे

दुर्गा रो अवतार हू  
ताकत रो तळवार हू  
करमा रो प्रणप्यारो हू  
नागण रो फणकारा हू

मैदी और मसाण पिछाणू, मौन तणी मनवार हू

राजस्थानी नार हू

राजस्थानी नार हू

हर बूटे री कळी-फळी हू हर घारै री क्यारी हू म्है  
खेता सौव सभाळी राखू, हरस भरी हरियाळी हू म्है

करसण री पतवार हू  
ग्रिम्ती हू घरवार हू  
घरती री हलकारो हू  
जीवण री पतियारा हू

फळवती फूला बेल वणी म्है, मीठी गटक जवार हू  
राजस्थानी नार हू  
राजस्थानी नार हू

भजना रा करताळ मजीरा, काती पुस्कर पडी हू म्है  
सावण रा भूला, राखी हू, फागण मूमल मंडी हू म्है

भगती री गणगौर हू  
सगती री सिरमोर हू  
मिनखा जूण जमारो हू  
वाती, दीप उजाळो हू

अघारै री धाक मिटावण, भळवळतो हुकार हू  
राजस्थानी नार हू  
राजस्थानी नार हू

## रावण कद मरसी

साल्यू साल मरै रावण पण साल्यू साल जनम लेले  
राम बाण नी काम करै रै, भीतर घात भरम ले ले ॥

देश विदेशी तोपा सू तो इण रो शीस नही भडमी  
गोळा तो थे बोळा ल्याया, बासू पार नही पडमी  
दस माथा को इक माथाळो जाणो हो थे के वर ले ॥

इण रा चेला चाटी म्हाटा जगा जगा पर छारघा है  
बाळ पडो दुकाळ पडो पण अँ तो मोज उडारघा है  
रिस्वत रा राकस ही राकस जगा जगा पर पग मेलै ॥

दूध दही घी खाड मसाला, कपडा मिरच दवा दार  
घणो मिलावट हो री है रै, जहर शुद्ध नी था सारू  
खरदूसण वररया परदूसण, सुरपणखा कबड्डी खेलै ॥

महगार्ई सुरसा सी सगळे, दिन दिन वधनी हो जावै है  
 दो नवरघा रै चादो चोखी सोनै रा बिस्कुट ल्यावै है  
 कुम्भकरण सा आप सोयरया, जणा जणा भभट भलै ॥

रावण रो वस घणौ लाम्बो, था बोला रावण कद मरसी  
 अगन पूत वणल्यो अँकरसा, अगन वाण घारघा सरमी  
 भूठी 'रामाण' करया के मिलसी, मिलसी जो माया मेले ॥



# हलोत्यो

आज हलोत्यो नट मत रै, हल कर काटे भटपट रै  
तू चला बसाल्यो खट, खटक खट खट  
खटक खट खट रै खाती जा

मेह बावो मोकळो

घररर गरजै मध, पळळळ पळकै बीज  
खळळळ खळकै नाळा म्हे देवा वाजरो बीज  
तो होसो घान रा थट

तू चला बसोलो खट

छणणण छाटया माठ छम छम कूटी खोच  
गळळळ पो गळवाण्यो, म्हे पूगा खेता बीच  
अर करा कमाई डट

तू चला बसोलो खट

खणणण खणकै गै'णा, फररर फहरै चीर  
कामण खेत सवार हाळो म्हे बड बीर  
तो काळ जावैलो घट

तू चला बसोलो खट

भररर भर पसीनो, लोई बणग्यो नीर  
टणमण टाकर टणक है वळद कमाई सोर  
म्हे भणा राम री रट

तू चला बसोलो खट



## भायला

काम नही, तो काम अेक है, कर बंठे हडताल भायला  
परजाततर रो पूजा मे बजा रिया खडताल भायला ।

राज आपणी आपा उणरा, अब कुण न के कहणी है  
रोजगार तो नही मिले पण वोट देण न चाल भायला ।

बाड खेत न ही खावे तो, समझ घोर संकट घडिया  
सेवा मीदर ज्यान समझ, बठ खीचले खाल भायला ।

सपन बणाया मे'न माळिया, सपना मे मखमल नापी  
लीरा लीरा वसतर बागा, ओ काई है हाल भायला ।

आपा घापी घणी माच रो, खावण रो नी स्वाद रह्यौ  
कुण पुरमे कुण न्यूत जिमाव, महगाई मे माल भायला ।

वो भूटो, वा साची कोनी, कुण पर करा भरोसा कया  
राजनीत दल म्हारी निजरा, मछुवाग ह जाळ भायला ।

# दोहा

गरज गरब न गाळ दे, गरज करावे घात ।  
गरज भुलावे फरज नै, गरज गिरज री जात ॥

गजब हुबै गरोबडा, गळती री सो गाळ ।  
दाणा री दरकार है, दळसी दस मल दाळ ॥

करणा री तो नाम है, कुदरत वर कमाल ।  
खारी माटी नीपजै, मोठी गुटक रसाल ॥

ठाला घेठचा ठाकरा, सूभै आळ पताळ ।  
घर आगण की डूमणी, नाच ना नो ताळ ॥

जलम्यो कठे तू जीवडा, कठे बसायी मेह ।  
उठी कठा सू वादळी, कठे वरसियो मेह ॥

ऊडा ऊडा समदरा, ऊची ऊची पाळ ।  
ऊचा ऊचा डूगरा, नीची नीची ढाळ ॥



## सोरठा

कातर कातर जोड, सीखे दरजी सीवणी  
तिणको तिणका ताड, बेर कर सो बावलो  
घोत्रण घाळा घाय, दाग मिटा दे दीठ रो  
नेह रै नीर निचाय, जीवण वागो जार का  
सुख मे सार समाळ, दुख मे दुरगत दीन की  
राख गम रखाळ, पार कर परमसरो  
विसवासा मे चास मित्र सदा मन सू कर  
हीणा करे हतास, घाखा देव दागला  
पच पच थक पचास, समरथ ओठ समाळ ले  
कात्या वण्यो कपास, मूरख कर दे मिनट मे  
अण जाण्या नै जाण, जाण्या नै वे जाणनी  
पक्की कर पहचाण, पछ करीजे फेसलो  
ब्रिण रा के विसवास, जिण न तू जाणै नही  
कद वणसी वो खास, चकमा दे चालाकडो





## कवित्व

पीढ़ियों से सघपरत राजस्थान के कवियों ने अनुभूत की अभिव्यक्त करने के लिए वाणी को ओजस्वी और कोमल सुर प्रदान करने वाले जिन शब्दों का निर्माण किया उनका उपयोग करते हुए मुघी पाठकों को आनंदित करने की सामर्थ्य रखने वाले कवियों में कल्याणसिंहजी ने जो स्थान बनाया है, जो ख्याति अर्जित की है, उसका निर्वाह इस सकलन द्वारा भली भाँति हुआ है। राजस्थानी जीवन के माधुर्य को अधिकार पूरा ढंग से ढालने की कला और कोशल अर्जित कर उन्होंने इस सकलन में हृदय-प्राप्ति काव्य प्रस्तुत किया है।

—कलाशदान शि० उज्ज्वल